इश्क का एन्साइक्लोपीडिया

रमेश जोशी

इश्क का एन्साइक्लोपीडिया

(हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)

(25 दिसंबर 2006 से 7 जुलाई 2010 तक)

रमेश जोशी की प्रकाशित पुस्तकें क्रमानुसार

1. कर्जे के ठाठ (हास्य-व्यंग्य कुण्डलिया संकलन)
2. रामधुन (हास्य-व्यंग्य कुण्डलिया संकलन)
3. पिता (कविता संकलन)
4. रास्ते में अटकी उपलब्धियाँ (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
5. बेगाने मौसम (गीतिका संकलन)
6. माई लेटर्स टू जार्ज बुश (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
7. कौन सुने इकतारा (गीतिका संकलन)
8. कुड़क मुर्गियों का लोकतंत्र (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
9. निरगुन कौन देस को बासी (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
10. देवता होने का दुःख (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
11. झुमका खोने की स्वर्ण जयंती (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
12. मूर्तियों से बँधे पशु (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
13. लीला का लायसेंस (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
14. ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)
15. लोकतंत्र का ब्लू व्हेल गेम (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
16. ईश्वर के साथ सेल्फी (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
17. शौचालय का चौकीदार (लघु हास्य-व्यंग्य आलेख संकलन)
18. इश्क का एन्साइक्लोपीडिया (हास्य-व्यंग्य पत्र संकलन)

इश्क का एन्साइक्लोपीडिया

रमेश जोशी

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN 978-93-91034-42-9

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 09350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण : किनेसिस क्रिएटिव ग्राफिक्स, भोपाल

अनुज्ञा बुक्स द्वारा भारत में मुद्रित

ISHQ KA ENCYCLOPAEDIA
Prose Satire by **Ramesh Joshi**

इस संकलन में संबोधित सभी जीवित आत्माओं को सभय
और जो स्वर्गीय हो गए उन्हें इस निवेदन के साथ कि
वहाँ खुद भी चैन से रहें और भगवान को भी शांति से रहने दें
कम से कम दो गज की दूरी बनाकर रखे।
कोरोना से भगवान की सुरक्षा ज्यादा ज़रूरी है।

अपनी बात

प्रिय पाठकगण

अपने समय को सर्वाधिक प्रभावित कर सकने की क्षमता सत्ताधारियों में होती है। इनमें से बहुत कम ऐसे होते हैं जो अपनी सदिच्छाओं और प्रयत्नों से इस अवसर का सदुपयोग करते हैं। अधिकतर पद का सुख भोगने में ही जीवन की सार्थकता समझते हैं। सरकारी खर्चे से नए-नए वस्त्र पहनते हैं, विश्व भ्रमण करते हैं और तीर्थयात्रा करके अपने पाप धोते फिरते हैं। कुछ ऐसे 'पुण्यात्मा' होते हैं जो न तो खुद चैन से बैठते हैं और न ही जहाँ तक उनका वश चलता है, किसी को चैन से बैठने देते हैं। व्यंग्य लेखक के विषय ऐसे 'संत' ही होते हैं।

अपने देशकाल के ऐसे ही संतों के नाम समय-समय पर लिखे गए पत्रों का यह संकलन 'इश्क का एन्साइक्लोपीडिया' मेरे पत्र संकलनों के क्रम में चौथा है। सबसे पहला संकलन 'माई लेटर्स टू जार्ज बुश' 2011 में आया। वैसे उन्हें पत्र लिखने की शुरुआत तो उनके पहले कार्यकाल में ट्विन टावर पर 9/11 वाले हमले के तत्काल बाद 2001 में ही हो गई थी। हम उन्हें कभी तसल्ली देने, कभी हिम्मत बंधाने तो कभी ओसामा को पकड़ने के तरह-तरह से भारतीय उपाय बताते रहे लेकिन उनका कार्यकाल बीत गया लेकिन ओसामा नहीं पकड़ा गया। 2008 में ओबामा आए और उन्होंने 2011 में ओसामा को मरवा दिया तो लगा बुश के नाम पत्रों को छपवा दिया जाए।

2001 से विशिष्ट लोगों को जब-तब पत्र लिखने का जो सिलसिला चला सो कमोबेश अभी तक चालू है। बुश के नाम पत्रों के बाद ऐसे ही पत्रों के दो और संकलन 'ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया' और 'लीला का लाइसेंस' 2019 में आए। आ तो और भी जाते लेकिन 2020 में देश को कोरोनासुर ने घेर लिया। आदमी बहुत देर तक तो मौत से भी डरकर नहीं रह सकता है। सो यह सिलसिला 2021 में फिर शुरू।

'इश्क का एन्साइक्लोपीडिया' आपके हाथों में है। इसमें 25 दिसंबर 2006 से 7 जुलाई 2010 तक की कालावधि में विशिष्ट संत जनों द्वारा दिए गए वक्तव्यों और लीलाओं पर सप्रेम चर्चा करते हुए पत्र संकलित हैं।

पत्रों के साथ दी गई तिथि से संदर्भों को समझने में सरलता रहेगी। उनके छाया चित्रों से उनकी छवि आपके मन-मंदिर में एक बार फिर कौंध जाएगी।

शायर कहता है– *कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन......*

हम दिनों को वास्तविक रूप में तो नहीं लौटा सकते लेकिन आपको इन पत्रों के द्वारा 2006 से 2010 तक के कालखंड में आभासी रूप में तो ले जा ही सकते हैं।

इस संकलन में 2007 में कलाम साहब का भारत के विकास का सपना 'विज़न 2020' से संबंधित आलेख भी है। आज कलाम साहब तो केवल हमारी यादों में हैं लेकिन उनके सपने का क्या हुआ? अभी-अभी तो गया है '2020'।

मूल्यांकन करें, हम कितना आगे बढ़े। कितना विकास किया? या फिर एक दूसरे की टांग खींचने में लगे रहे, हिन्दू-मुस्लिम करते रहे, दर्पण के सामने खुद को देखकर मुग्ध होते रहे?

1 जनवरी 2021 **–रमेश जोशी**

अनुक्रम

1.	पुरुष बनने की चाह	9
2.	हम आपके साथ हैं	10
3.	बिन इंग्लिश सब सून	12
4.	घोड़ी पे हो के सवार	14
5.	के तो डालियो कोनी, के कसार को लाडू कोनी	15
6.	लगे रहो गौतम भाई	17
7.	विकास का सपना	19
8.	विकास का मॉडल	22
9.	अभिव्यक्ति का स्टाइल	23
10.	लीकाँ चले कपूत	25
11.	हरण	27
12.	अनिश्चय, शंका और दुविधा	28
13.	बुद्धावतार बुद्धदेव	29
14.	कुछ न दुआ ने काम किया	31
15.	काँटों का ताज	32
16.	कलाम-कुटिया	33
17.	तोताराम का ख़याल रखिएगा	34
18.	जन्मों का नाता	36
19.	प्रोटेस्ट बनाम प्रोस्टेट ग्रंथि	38
20.	फिर न पछताना पड़े	39
21.	वर्दी और सर्दी	40
22.	घास के चक्कर में	41
23.	एक नासमझ आदमी	42
24.	अखंड रामायण	45
25.	नो क्षमा : नो माफ़ी	47
26.	ट्रिपल 'ए' पब्लिक स्कूल	49
27.	कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी	51
28.	यह देश हुआ बेगाना	53
29.	जूते की नोक पर	55
30.	राम बड़ा की 'गोगाजी'	58
31.	प्रेक्टिकल ब्रह्मर्षि का नृतत्त्वशास्त्र	60
32.	तस्वीर तो बदली हुई ही है	62
33.	खुराफात की जड़	63
34.	मास्टर ब्लास्टर एंड मास्टर	65
35.	सलमान रुश्दी की शादी	66
36.	पेटू भारत	68

37. आतंकवादी जी के नाम 69
38. मोहि कहाँ विश्राम 71
39. राज्यपाल बनने से तो अच्छा है 74
40. सादगी की शपथ 76
41. मोहन-मिलाप 78
42. शुभकामना की शक्ति 80
43. वसुंधरा-किंकर 82
44. कुछ और रिश्ते 84
45. आत्मा की शांति 87
46. मवेशियों के बीच 90
47. टक्कर 93
48. सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं 96
49. बुरे फँसे, थरूर जी 98
50. इंग्लिश की माया 100
51. वेलेंटाइन डे उर्फ़ वेल हटाइन डे 104
52. सुरक्षा-व्यवस्था और रोज़गार-सृजन 107
53. जूता गिरा रे, सार्कोजी जी के द्वार पे 110
54. कोई नया मुद्दा लाओ, यार 113
55. लोगों का काम है घूरना 116
56. थरूरफोर्ड अंग्रेजी-हिंदी-अंग्रेजी डिक्शनरी 119
57. दरोगा जी, चोरी हो गई 121
58. सोनिया जी, नो फिकर, नो चिंता 124
59. मना करने का अधिकार 127
60. सोनिया जी, सादगी के सदके 129
61. महिला आरक्षण की 'उदार हृदय' व्याख्या 132
62. क़यामत का इंतज़ार 134
63. मन चंगा तो कठौती में गंगा 136
64. मोह न नारि, नारि के रूपा 139
65. ब्लेक मनी : व्हाइट पेपर 142
66. इश्क का एन्साइक्लोपीडिया 144
67. चोगा, टोपी और बर्बरता 146
68. बिना तिल का ताड़ 148
69. टाइगर ट्रबल 150
70. न रुपया लिया, न दिया 153
71. बड़े बेआबरू होकर 155
72. खरबूजे के बीज और फंगस 157

1. पुरुष बनने की चाह

('यदि यह काम किसी पुरुष ने किया होता तो इतना बवाल नहीं मचता'–किरण शॉ वाले तथाकथित लिप लॉक प्रकरण पर वसुंधरा जी की प्रतिक्रिया)

श्रीमंत् वसुंधरा जी,

आशीर्वाद। आपके कैट वाक पर लोग खुसर-फुसर कर रहे थे और अब लिपलॉक पर तो छाती ही कूटने लग गए हैं। थोड़ा सा भी इंतज़ार नहीं किया। ये सब कुंठित लोग हैं। बाद में तो पता भी चल गया कि यह ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं था जैसा कि लोगों ने समझा था। जब भगवान राम सीता-स्वयम्वर में पधारे तो वे लोगों को अलग-अलग रूपों में दिखाई दिए। इसी प्रकार आपके चुम्बन या स्नेह को विकृत-बुद्धि लोगों ने अपनी दृष्टि से देखा। इसलिए यह ध्यान देने का विषय भी नहीं था। आपने ठीक ही किया कि उस विषय को तूल नहीं दिया।

सारे मामले पर शांत रह कर भी आप प्रतिक्रिया दे ही गईं। आपने जो कहा उसका भाव कुछ इस प्रकार था कि यदि यह काम किसी पुरुष ने किया होता तो इतना बवाल नहीं मचता। इससे पता चलता है कि आप कहीं न कहीं पुरुष को श्रेष्ठ समझती हैं या यह सोचती हैं कि काश...। पर बात ऐसी नहीं है। पहली बात तो यह कि ईश्वर ने जिसे जिस रूप में बनाया है वह उसी रूप में खुश रहे। और आप तो माशा अल्लाह ! वैसे भी आपके नाम से पूर्व 'श्रीमंत' जुड़ता ही है। जो गद्दी पर बैठता है वह राजा होता है। राजा सभी प्रकार से पुल्लिंग होता है। रज़िया को भी सुलताना या सुलातानन्नी या सुलातानण नहीं कहा गया। सुलतान ही कहा गया।

अपने देश में तो धन की देवी लक्ष्मी, ज्ञान की देवी सरस्वती और शक्ति की देवी दुर्गा तीनों ही स्त्रियाँ हैं। धन, ज्ञान और बल तीनों मिल जाएँ तो फिर क्या कहना। हमने 12 दिसंबर 2006 को आपको पहली बार और निकट से जयपुर में एक शादी में देखा था। हमें तो आप एक अच्छी सी, प्यारी सी, मासूम सी लड़की लगीं। भगवान की दया से आपके पास तीनों ही बल हैं। तभी देखिए ना, कलेक्टर और उच्चाधिकारी हमें मिलने तक का वक्त नहीं देते, सुनना तो दूर की बात है पर आपके सामने इनकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। पिछले वर्ष कलेक्टर्स कांफ्रेंस में जोधपुर के कलेक्टर बीमार हो गए और अबकी बार ऊर्जा सचिव माथुर में तो इतनी भी ऊर्जा नहीं बची कि आपके तेज का सामना कर सकें और बीमार हो गए। आज तक किसी पुरुष मंत्री की कांफ्रेंस में ऐसा नहीं हुआ। अब तो पुरुष न होने का गम नहीं होना चाहिए।

आपको पता होना चाहिए कि शेरनी शिकार करके लाती है तथा शेर और बच्चे